

## हिंदी कहानियों में आदिवासी विचारधारा

अभिषेक कुमार मीना

शोधार्थी (पीएचडी)

हिंदी विभाग हैदराबाद विश्वविद्यालय, तेलंगाना

Mob. 8741850384

'अस्मिता' का सामान्य अर्थ 'मैं' से है अर्थात अस्मिता निजत्व से परिचय कराता है तथा स्वत्व का बोध कराता है जिसकी प्राप्ति हेतु मनुष्य सर्वदा संघर्षरत या प्रयासरत रहता है। भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज है, और अस्मिता के उदय की बात सबसे पहले इसी वर्ण व्यवस्था को लेकर आने लगा। यह वर्ण व्यवस्था असमानता के नियम पर आधारित थी, इस व्यवस्था में वर्ण, लिंग, जाति को आधार के रूप में लिया गया।

अस्मिता मूलक विमर्श के अंतर्गत वे सारे विषय समाहित होते हैं जिनके साथ मनुष्य की हमको जोड़कर देखा जाता है और जिन्हें हाशिए पर लाकर छोड़ दिया जाता है। प्रमुखतः स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि विमर्श इसके अंतर्गत आते हैं। अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से आदिवासी समुदाय बाकी सभी समुदायों से पृथक है।

आज दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श साहित्य के सामने चुनौती बनकर खड़े हुए हैं। यह उसी नवजागरण का परिणाम है। दलित साहित्य और स्त्री साहित्य की बातों को लेकर विविध प्रश्न उठते हैं। परंतु अपने लोक संस्कृति एवं परंपराओं का संरक्षण केवल आदिवासी समुदाय ही कर रही है। हिंदी में आदिवासी शब्द का प्रयोग देश के मूल निवासियों और उनके वंशजों के लिए होता है जिन्हें संवैधानिक भाषा में अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। आदिवासी समुदाय वो होते हैं जो आदिम युग से अपने मूल प्रदेश अथवा क्षेत्र में अपने मौलिक परिस्थितियों के साथ जीवन निर्वाह कर रहे हैं। उन्हें मूलवासी, वनवासी आदिमजन, जंगल पहाड़ में रहने वाला जैसे विविध नामों से पुकारा जाता है।

आदिवासी विचारधारा को अगर हम समझने का प्रयास करेंगे तो यह पाएंगे कि यह विचारधारा जो आदेश से जंगलों में निवास कर रहे हैं जिन्हें अपने अधिकारों के बारे में जानकारी नहीं है तथा जिन्हें अतिरिक्त धारा में रखा गया है। उन्हें मुख्यधारा में लाने का प्रयास है। आदिवासी साहित्य में दलित की तरह किसी वाद या विचारधारा नहीं है। आदिवासी विचारधारा को समझने के लिए हमारे समक्ष रांची घोषणापत्र है, जिसके अनुसार आदिवासी साहित्य की बुनियादी शर्तें उनमें आदिवासी दर्शन का होना है जिसके मूल तत्व हैं-

1. प्रकृति की लाए दाल और संगीत का जो अनुसरण करता है
  2. जो प्रकृति और प्रेम के आत्मीय संबंध और गरिमा का सम्मान करता है
  3. जिसने पूर्वजों की ज्ञान विज्ञान कला कौशल और इंसानी बेहतरी के अनुभवों के प्रति आभार हो
  4. जो समचे जीव जगत की अवहेलना नहीं करें
  5. जिसने जीवन की प्राप्ति आनंदमई आदत अदम्य जिजीविषा हो
  6. जो धरती को संसाधन की बजाय मां बनकर उसके बचाव और बचाव के लिए स्वयं को उसका संरक्षक मानता हो
  7. स्वानुभूति, सहानुभूति की बजाय सामूहिक अनुभूति जिसका प्रबल स्वर संगीत हो
  8. जिनमें रंग लिंग धर्म नस्ल आदि का कोई विशेष आग्रह न हो
  9. जो सहअस्तित्व, समता, सामूहिकता, सहजीविता, सहभागिता और सामंजस्य को अपना आधार मानते हुए रखरखाव में विश्वास रखता हो।
- आदिवासी विचारधारा में इस प्रकार कुछ बिंदु हैं जो इसको अन्य विचारधारा से अलग करता है।

जब हम आदिवासी स्त्री के बात करते हैं तो हमारे समक्ष उसकी स्वतंत्र संघर्षशील एवं आत्मनिर्भर छवि सामने होती है। भारतीय समाज और संस्कृति की तुलना में आदिवासी स्त्री यहां प्रारंभ से ही स्वतंत्र रही हैं, चाहे प्रेम हो या स्वतंत्रता हो या पात्र चयन करने में हो, वह सदा सर्वदा आत्मनिर्भर रही हैं और यह एक ऐसी विशेषताएं जो अन्य स्त्रियों से अपने आप को पृथक करती है। मेहरुनिसा परवेज ने अपनी कहानियों में इन्हीं आदिवासी स्त्रियों को चित्रित ही नहीं बल्कि स्वाबलंबी भी बनाया है। वे कमरतोड़ कार्य करने के पश्चात अपने पूरा परिवार का भरण पोषण करने में समक्ष होती हैं। मेहरुनिसा परवेज ने आदिवासी स्त्रियों की शोषित रूप के साथ ही एक कदम आगे जाकर उन्हें आदिवासी स्त्रियों में विरोध करने की क्षमता को भी जगाया है। आदिवासी समाज में स्त्री के ऊपर हो रहे अत्याचार शोषण को देखकर स्त्री को बिठाए रखना उनके लिए असह्य साबित हुआ। उसे अपनी स्त्री पात्रों को विद्रोह के धरातल पर उतारने का प्रयास करती हैं। वे अपनी कहानी 'कानी बात' में दल्हे सा और उसकी मां जंगलों में काम करती हैं और उसका पिता खेतों में काम करता है। वह और उसकी मां जंगलों से लकड़ी काटना, मछलियां पकड़ना जैसे कार्य करती ही रहती हैं, साथ ही मुर्गी पालन का भी कार्य करते हैं। इसी प्रकार 'जंगली' कहानी में लच्छू और उसकी मां करते हैं। यहां हमें देखने को मिलता है कि आदिवासी स्त्रियां अपने पति पर निर्भर नहीं रहती हैं वह घर से बाहर निकल कर जिस जल-जंगल-जमीन की बात की जाती है उसी की ओर अग्रसर रहती हैं। 'देहरी की खातिर' कहानी में जब पिताजी लड़की को घर से निकाल देते हैं, तब गांव की काकी उसे अपने घर में पनाह देती है, क्योंकि वह मां बनने वाली थी। काका-काकी उसे बहुत स्नेह दलार के साथ अपने घर में स्थान देते हैं। बच्चे के जन्म के पश्चात काकी ही उसके और उसके बच्चे का ख्याल रखती है लेकिन काका की नियत में खोट आ जाता है जिस प्रकार एक पुरुष प्रधान समाज एक स्त्री का शोषण करने में संकोच नहीं करता उसी प्रकार काका जब शोषण करना चाहता है तो काकी सही समय पर बेटी को बचा लेती है। एक नारी की अस्मिता को बचाए रखने के लिए काकी अपने पति का टांगिया से मारकर हत्या कर देती है। यहां देख सकते हैं कि स्त्री अपनी अस्मिता अपने आत्म सम्मान को बचाए रखने के लिए किसी पुरुष के अधीन नहीं है।

रचनाकर कोमल द्वारा रचित 'पहचान' कहानी में आदिवासी जनजाति का हृदय विदारक दर्द पाठकों के समक्ष दिखाई पड़ता है। कहानी के प्रारंभ में मुखिया सिंह जी के पास एक आदिवासी युवती जाति प्रमाण पत्र बनवाने हेतु आवेदन लेकर आती है। मुखिया उसके शरीर को निहारती हुई उससे नाम पूछता है वह कहती है कि मेरा नाम सोनिया टोप्पो है। उसके पश्चात मुखिया कहता है कि तुम पढ़ाई करती हो तब सोनिया कहती है कि मैं इंटर में पढ़ती हूं। तब अचानक मुखिया घूर कर कहता है तुम तो आदिवासी नहीं लगती और तुम्हारा नाम भी आदिवासी जैसा नहीं लगता? उनके नाम तो एतवारी, सुरजी आधी हुआ करते हैं।" संजीव द्वारा लिखित 'अपराध' कहानी जो नक्सलवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। 'अपराध' कहानी के नायक सचिन (बुलबुल) को जब सजा दी जाती है तो उससे बचाव के लिए बोलने को कहा जाता है तब वह कहता है मुझे इस पूंजीवादी

प्रतिक्रियावादी न्याय व्यवस्था में विश्वास नहीं है। आम जनता भी जिसे न्याय का मंदिर कहती है भालू तैरे पंजे और जूता चोरों से भरा पड़ा है। ... यह लाल थानी लाल जेलखानी और लाल कचहरिया इन पर कितने बेकसूरों का खून होता है। वकीलों और जजों का काला गाउन न जाने कितने खून के धब्बों को छुपाए हुए हैं। परिवर्तन की महान रास्ते में एक मुकाम भी आएगा जिस दिन इन्हें अपना चरित्र बदलना होगा वरना इनकी बुलंदियाँ धूल चाटती नजर आएंगी।” कहानी में बताया है कि सत्ता व्यवस्था और समाज की तमाम विरोधियों को संघर्ष विरोध के माध्यम से हराया जा सकता है जिसके लिए क्यों ना समानांतर सत्ता और व्यवस्था की स्थापना करनी पड़े संजीव मानते हैं कि आदिवासी किसान मजदूर वर्ग नारी द्वारा सामंतवाद की बात की फैलते वर्चस्व ही हिंसात्मक विद्रोह और संघर्ष ही नक्सलवादी आंदोलन है।

इसी प्रकार संजीव की 'चाकरी' कहानी में हम एक आदिवासी नवयुवक के दर्द को देख पाते हैं। वह लड़का अपने ही लोगों द्वारा शोषण एवं उत्पीड़न का शिकार होता है और उसे भी स्थापित कर दिया जाता है। गांव के सरपंच रघुवीर सहाय उसके जमीन को हड़प लेता है और उसे चमार एवं सूअर के नाम से नामित कर उसे खदेड़ने में अहम भूमिका निभाता है। परंतु लड़का अपने सभी परिस्थितियों से लड़कर जीवन से संघर्ष कर एस. एस. सी की परीक्षा में पास होता जाता है। आश्चर्य की बात यह सामने आती है कि जहां नौकरी करता है उसे पर्सनल मैनेजर की बेटी का ट्विटर बनना पड़ता है और वह कहता भी है कि “एंप्लॉयमेंट एक्सचेंज से भर्ती करने अफसरों और लड़कों की बिल्डिंग बनती देखी है मैं यह सब देखता रहता हूँ और टूटता रहता हूँ, टूटता रहा हूँ और देखता रहा हूँ।” इसके अलावा रांगेय राघव की 'गदल' कहानी, मनीष राय की 'शिलान्यास', हरिहर वैष्णव की 'फैसला' कहानी भी हमारे सामने आती हैं।

#### निष्कर्ष:-

अस्मिता मूलक विमर्श के अंतर्गत आदिवासी विमर्श एक प्रभावी विमर्श है। हिंदी कहानी साहित्य को देखकर इस निष्कर्ष पर उत्पन्न होते हैं कि आदिवासी समुदाय अपने जल जंगल जमीन में से पुनः जुड़ा होता है वह अपने वृक्षों को जल को देवता के रूप में देखता है क्योंकि उनसे सभी व्यक्तियों के मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है परंतु हमारा यह सभ्य समाज आज भी उनको पिछड़ा हुआ मानता है संविधानिक रूप से उनको अंतिम पंक्ति से अग्रिम पंक्ति तक लाने का जो आता है उसमें हिंदी का कथा साहित्य सृजन कर रहा है।

आदिवासी साहित्य की कोई केंद्रीय विधा नहीं है, जिस तरह स्त्री एवं दलित साहित्य की आत्मकथा लेखन में देखने को मिलता है आदिवासी जैसे ही हमें आदिवासी के नहीं मिलते। आदिवासी कलम की धार तेजी से अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार कर रही है धीरे-धीरे कविताएं, कहानियां, उपन्यास आदि के माध्यम से भले ही वह एक आदिवासी क्षेत्र से आ रहे रचनाकार हो या आदिवासी समाज में जीवन निर्वाह कर रहे समाजों में अपनी लेखनी के धार के माध्यम से आदिवासियों के समस्त विशेषताओं को कर्म-कुशलताओं को चित्रित करने का भरसक प्रयास कर रही है। आजादी से पहले आदिवासियों की मूल समस्या वनोपज पर प्रतिबंध तरह-तरह के लगाए महाजनी शोषण, पुलिस प्रशासन की सजातियां आती रही जबकि आजादी के बाद भारतीय सरकार द्वारा बनाए गए विविध नियमों के माध्यम से उनके जल, जंगल, जमीन का अधिकार छिनता चला गया इस प्रक्रिया में एक और उनकी सांस्कृतिक पहचान उनसे छूटती ही गई दूसरी ओर अस्तित्व की रक्षा कर पाना उनके लिए असंभव सा लगा। यहाँ आदिवासियों को अपने सभी अधिकारों को अंतिम पंक्ति से अग्रिम पंक्ति तक लाने का सफर और एक

सामुदायिक भावना से जीवन निर्वाह कर रहे मनुष्य का चित्रण सफल रूप से एक साहित्यकार को अपने साहित्य में करने की आवश्यकता है तभी वहां एक आदिवासी की विमर्श की बात सामने ला पाएंगे। जब एक लेखक की अस्मितामूलक विमर्श पर अच्छे विचार सामने आएंगी तो वह समाज को सभ्य एवं सुसंगठित करने में सहायक साबित होगा।

\*\*\*\*\*

#### संदर्भ ग्रंथ -

1. संजीव, संजीव की कथा यात्रा: दूसरा पड़ाव, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. परवेज, मेहशनिसा (2006). मेरी वस्त्र की कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
3. सं. रमणीक गुप्ता, हरिराम मीणा का साक्षात्कार, युद्धरत आम आदमी, अंक 13, नव. 2014
4. टेटे, वंदना(2013). आदिवासी साहित्य: परंपरा और प्रयोजन, प्रथम संस्करण, केरकेट्टा फाउंडेशन रांची
5. टेटे, वंदना. आदिवासी दर्शन और साहित्य
6. यादव, चौथी राम(2014). उत्तर शती के विमर्श औरहासिए का समाज, नयी दिल्ली, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर